जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

पात्रता ही पवित्रता की जननी है।

- बिन्दु में सिंधु, पृष्ठ - 9

वर्ष : 25, अंक : 24 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (द्वितीय) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25/-, एकप्रति : 2/-

विदाई समारोह सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की परम्परानुसार इस वर्ष भी शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों को महाविद्यालय परिवार द्वारा दिनांक 2 मार्च 2003 को विदाई दी गई।

समारोह की अध्यक्षता अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्यअतिथि के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में इनकमटैक्स के सीनियर एडवोकेट श्री नवरतनमलजी रांका, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील एवं संस्कृत महाविद्यालय के प्राध्यापक श्री प्रकाशजी जैन मंचासीन थे।

इस अवसर पर अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों ने निम्न बिन्दुओं पर अपने विचार व्यक्त किये -

(1) हम यहाँ नहीं होते तो क्या होते (2) महा.में हमने क्या पाया (3) इस महा. की क्या विशेषतायें हैं (4) तत्त्वप्रचार में अपना योगदान किसप्रकार देंगे। इसके साथ ही अपने अनुज छात्रों को मार्गदर्शन भी दिया।

संयोगवश दिनांक 2 मार्च को ही प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन में महाविद्यालय के संबंध में प्रशंसात्मक उद्‌गार निकले, जिसे सभा के समय सभी को पुन: सुनाया गया।

अध्यक्षीय भाषण के रूप में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अन्तिम वर्ष के छात्रों को मार्गदर्शन देते हुये कहा कि अब आप अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उतरने जा रहे हैं। वहाँ सब तरह की समाज के साथ आपका सम्पर्क होगा। इस समाज की मनोवृत्ति ऐसी है कि वह किसी को सिरमाथे पर बिठा सकती है तो थोड़ी सी चूक में जमीन पर भी उतार सकती है ; अत: इन सबसे अप्रभावित रहकर जो स्व-पर कल्याण के लिये तत्पर रहेंगे - वे ही सफल हो सकेंगे।

अन्त में शास्त्री अन्तिम वर्ष के छात्रों को श्रीमती कमला भारिल्ल द्वारा तिलक लगाकर, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा स्मृतिचिन्ह एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा श्रीफल देकर तथा शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा माल्यार्पण कर विदाई दी गई।

कार्यक्रम का संचालन रवीश गांधी, ज्ञायक जैन तथा प्रयंक जैन ने संयुक्तरूप से किया।

वेदीशिलपान्यास महोत्सव सानन्द सम्पन्न

द्रोणगिरि (म. प्र.) बुन्देलखण्ड में लघु सम्मेदशिखर के नाम से विख्यात सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा निर्माणाधीन सिद्धायतन संकुल में बनने जा रहे विद्यमान वीस तीर्थंकर जिनालय की वेदी का शिलान्यास महोत्सव दिनांक 7 मार्च से 9 मार्च 2003 तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री छोटेलाल ऋषभकुमारजी जैन कर्रापुर परिवार की ओर से सिद्धपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। इसी के अन्तर्गत **'छहढाला: एक अनुशीलन'** विषय पर द्विदिवसीय एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद, पण्डित अभयकुमारजी जैनदर्शनाचार्य छिन्दवाड़ा, ब्र. धन्यकुमारजी बैलोकर गजपंथा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर आदि विद्वानों ने भाग लिया। संचालन पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री बड़ामलहरा ने किया।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन श्री अनन्तभाई अमोलकचंदजी सेठ मुम्बई के मुख्य आतिथ्य में शिलान्यास सभा का आयोजन किया गया। अध्यक्षता श्री सुखदयालजी डेवड़िया केसली ने की।

प्रथम तल पर बीस तीर्थंकर जिनालय की वेदी का शिलान्यास श्री निहालचंदजी ओसवाल जयपुर तथा श्री महीपालजी शाह ज्ञायक बाँसवाड़ा ने और द्वितीय तल पर गुरुदत्त जिनालय की वेदी का शिलान्यास श्री धन्यकुमारजी सिंघई छिन्दवाड़ा एवं श्री उत्तमचंद संजयकुमारजी मोदी शाहगढ़ ने किया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सुबोधकुमारजी शाहगढ़ द्वारा सम्पन्न कराये गये।

रायपुर (छ.ग.) - यहाँ विगत दो माह से प्रत्येक रविवार को साधर्मी भाई-बहिनों द्वारा तत्त्वगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। दिनांक 23 फरवरी 03 को सी. डी. प्रवचन के उपरान्त प्रश्न-मंच का आयोजन भी किया गया, जिसका लाभ सम्पूर्ण समाज ने लिया। कार्यक्रमों का पुरस्कार वितरण श्री पी.सी. गुरहाजी द्वारा किया गया।

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

26

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

नौकर के द्वारा यह सब सुनकर राजा समुद्रविजय उसी समय नगरवासी, अन्त:पुर के परिजन तथा यदुवंशियों के साथ श्मशान गये। जब वहाँ राख में कुमार के आभूषण देखे तब कुमार का मरण निश्चित रूप से हो गया ह्न ऐसा जानकर सभी विलाप करने लगे। राजा समुद्रविजय पश्चाताप से पीड़ित हो बहुत दु:खी हुए। उन्होंने मरणोत्तरकाल की सभी क्रिया-कर्म किए तथा अपनी निन्दा की।

धीर-वीर वसुदेव एक ब्राह्मण का वेश धारण कर नि:शंक हो पश्चिम दिशा की ओर चल पड़े। योजनों चलते-चलते वे विजयखेट नामक नगर में पहुँच गये। वहाँ क्षत्रिय वंशोत्पन्न सुग्रीव नामक एक गंधवाचार्य से परिचय हुआ। संगीतप्रेमी सुग्रीव वसुदेव के बाह्य व्यक्तित्व से ही प्रभावित हो गया। उस सुग्रीव गंधवाचार्य की सोमा और विजयसेवा नाम की दो सुन्दर कन्यायें थीं, दोनों गंधर्व विद्या में निपुण थीं। इसकारण उनके पिता गंधवाचार्य को उन पर गौरव था। अत: उसने ऐसा निश्चय कर लिया कि जो इन्हें इस विद्या में जीतेगा वही उनका पति होगा।

वसुदेव ने उन दोनों कन्याओं के साथ संगीत प्रतियोगिता को जीता और सुग्रीव ने सन्तुष्ट होकर उन दोनों का विवाह वसुदेव से कर दिया। वसुदेव उनके साथ कुछ समय सुखपूर्वक वहीं रहे। विजयसेना से अंकुर नामक पुत्र हुआ। तदनन्तर वसुदेव उन दोनों पत्नियों को वहीं छोड़ पुन: मिलने का आश्वासन देकर पुन: अज्ञातवास में चले गये। भ्रमण करते हुए उन्होंने एक बहुत बड़ी अटवी में हंस, सारस तथा कमलों से सुशोभित एक सुन्दर सरोवर देखा। वहाँ उन्होंने अपनी प्यास बुझाई और स्नान किया। तत्पश्चात् उन्होंने जल को इसतरह तरंगित किया कि जिससे मृदंग के समान शब्द निकलता था। उस शब्द को सुनकर वहाँ सोया हुआ एक बड़ा हथी क्रोधित होकर खड़ा हो गया। मारने को आगे बढ़े हुए उस क्रोधित हाथी को वसुदेव ने वश में करके उसके दांतों पर झूले की तरह झूलकर अपना बल-पराक्रम प्रदर्शित किया और उस पर सवार हो गये।

बलवान हाथी को वश में करने वाला बहादुरी का कार्य एकान्त में हुआ था, इसकारण वसुदेव के अरण्यरुदन जैसा लगा। वे सोचने लगे ह्न ''यदि यह काम जनसमूह के बीच में शौर्यपुर में हुआ होता तो लोग धन्य-धन्य कहने के लिए मुखर हो जाते, धन्यवाद के स्वर से आकाश गूंज जाता।''

वसुदेव यह विचार कर ही रहे थे कि उसी समय दो धीर-वीर विद्याधर हाथी के मस्तक पर बैठे वसुदेव का अपहरण करके उठा ले गये और उसे विजयार्द्ध पर्वत के उपवन में छोड़ गये। वहाँ जब वसुदेव अशोक वृक्ष के नीचे शोक रहित सुख से बैठ गये; तब उन विद्याधर कुमारों ने वसुदेव को नमस्कार कर कहा ह्न ''हे स्वामिन् ! तुम यहाँ अशनिवेग नामक विद्याधर राजा के आदेश से हमारे द्वारा लाये गये हो। उसे तुम अपना श्वसुर समझो। मेरा नाम अर्चिमालीकुमार और यह मेरा साथी वायुवेग है।'' ऐसा कहकर एक तो वही वसुदेव की रक्षा में खड़ा रहा और दूसरे ने राजा अशनिवेग के पास जाकर कहा ह्न ''हे स्वामिन् ! हाथी को मर्दन करनेवाले धीरवीर विनीत और नवयौवन से सुशोभित कुमार को हम यहाँ ले आये हैं।'' यह समाचार जानकर अशनिवेग हर्ष विभोर हो गया और समाचार लाने वाले को अपने आभूषण उतारकर पुरस्कार में दे दिये।

वसुदेव को सम्मानपूर्वक नगर में लाया गया। शुभ मुहूर्त देखकर अपनी यौवनवती सर्वगुण सम्पन्न श्यामा नामक बेटी का वसुदेव के साथ विवाह कर दिया। नवदम्पत्ति वहाँ सुख से अपना समय बिताने लगे। एक दिन श्यामा ने सत्रह तारवाली वीणा बजायी, जिससे वसुदेव ने प्रसन्न होकर मुँह माँगा वरदान माँगने के लिए कहा ह्न श्यामा ने वर में यह माँगा कि ''चाहे दिन हो या रात आप मेरे बिना अकेले न रहें'' यह वर माँगने का कारण एक मात्र यह है कि ह्न मेरा शत्रु अंगारक तुम्हें हरकर ले जा सकता है ह्न मुझे ऐसा भय है। मेरे रहते वह आपका हरण नहीं कर सकता; क्योंकि मैं विद्याधर कन्या हूँ मेरे पास उसका सामना करने की विद्या है, जो आपके पास नहीं है।

कालान्तर में यह घटना घट भी गई, जिसकी श्यामा को संभावना थी। एक दिन सोते समय वह शत्रु अंगारक, जो श्यामा का चचेरा भाई भी था, वसुदेव को अपहरण करके उठा ले गया। श्यामा की नींद टूटते ही उसने अंगारक का पीछा किया और श्यामा तथा वसुदेव ने मिलकर अंगारक को मारकर भगा दिया। **(क्रमश:)**

निबन्ध प्रतियोगिता सम्पन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्रांगण में दिनांक 16 जनवरी को 'निश्चय-व्यवहार की सांव्यवहारिक जीवन में उपयोगिता' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मनोज जैन अभाना, द्वितीय पुरस्कार जितेन्द्र यादव एवं तृतीय पुरस्कार दीपेश जैन गुढ़ा को दिया गया।

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

9

यह आत्मा गहरे-गहरे ध्रुवतल में अपरिमित शक्ति रखता है। वहाँ अपरिमित अनन्तज्ञान, आनन्दादि अनन्तानन्त गुणों का भण्डार भरा है - ऐसे उस निज ज्ञायक भगवान की सच्ची महिमा, जिसे प्रतीति में आती है, वह रागादि विभाव से इतना ऊब जाता है कि 'मुझे ये नहीं चाहिए मुझे तो मात्र पूर्णानन्द स्वरूप अपने नाथ के सिवा अन्य कुछ नहीं चाहिए' - ऐसी अन्तर में पक्की दृढ़ता पूर्वक 'मात्र ज्ञायक द्रव्य ही मैं हूँ' ऐसे भावरूप परिणमित हो जाता है। अरे ! दुनिया प्रशंसा करे या निन्दा, वह तो जगत की बात है, उसके साथ तुझे क्या लेना-देना ? आत्मस्वभाव की अद्‌भुत महिमा भली-भाँति समझमें आने पर मुमुक्षुजीव अन्तर में संसार से इतना अधिक थक जाता है कि 'मुझे तो एक अपना आत्मद्रव्य ही चाहिये, अन्य किसी की आवश्यकता नहीं है- पूर्णानन्दस्वरूप जो त्रैकालिक द्रव्यस्वभाव वह एक ही इष्ट है - ऐसी दृढ़ता करके बस, 'ज्ञायक द्रव्यस्वभाव ही मैं हूँ, शरीरादि परवस्तु या रागादि परभाव सो मैं नहीं। दया-दान, व्रत, तप का विकल्प अथवा एक समय की अधूरी - पूरी पर्याय मेरा त्रैकालिक स्वरूप नहीं है। अरे ! ज्ञानादि गुणभेदरूप भी मैं नहीं हूँ, मैं तो अनन्तगुणों का सागर एक शुद्ध अभेद भगवान ही हूँ - ऐसे भावरूप परिणम जाता है। - सम्यग्दर्शन - ज्ञानरूप निर्मलभावरूप स्वयं हो जाता है, अन्य सब कुछ छोड़ देता है। चाहे शुभराग हो या क्षायोपशमिक ज्ञान हो, वह सब त्रैकालिक द्रव्य स्वभाव का आश्रय लेकर छोड़ देता है। जीव जब पर्याय का आश्रय छोड़ देता है और त्रकालिक द्रव्यस्वभाव का आश्रय करता है; तब उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है।

प्रश्न - आत्मा पर में तो कुछ फेर-फार नहीं कर सकता वह तो ठीक; किन्तु क्या अपनी पर्यायों में फेर-फार करना भी उसके बस में नहीं है ?

उत्तर - अरे भाई ! जहाँ द्रव्य का निर्णय किया वहाँ वर्तमान पर्याय स्वयं द्रव्योन्मुख हो गई। फिर तुझे कहाँ फेर-फार करना है। मेरी पर्याय मेरे अपने द्रव्य में से आती है - ऐसा निर्णय करते ही पर्याय द्रव्योन्मुख हो जाती है। वह पर्याय अब क्रमश: निर्मल ही होती रहती है और शान्ति बढ़ती जाती है - इसप्रकार पर्याय स्वयं जहाँ द्रव्य में अन्तर्मग्न हो गई वहाँ उसे बदलना कहाँ रहा ? वह पर्याय स्वयं द्रव्य के वश में आ ही गई है। पर्याय आयेगी कहाँ से ? द्रव्य में से; इसलिये जहाँ संपूर्ण द्रव्य को वश में कर लिया (श्रद्धा-ज्ञान में स्वीकार कर लिया) वहाँ पर्यायें वश में हो ही गई हैं अर्थात् द्रव्य के आश्रय से पर्यायें सम्यक्-निर्मल ही होने लगीं। जहाँ स्वभाव का निर्णय किया वहीं मिथ्याज्ञान दूर होकर सम्यग्ज्ञान हुआ तथा मिथ्याश्रद्धा पलटकर सम्यग्दर्शन हुआ। इसप्रकार निर्मल पर्यायें होनें लगी, वह भी वस्तु का धर्म है। वस्तु का स्वभाव बदला नहीं और पर्याय क्रम की धारा नहीं टूटी। द्रव्य के ऐसे स्वभाव का स्वीकार करने से पर्याय की निर्मल धारा प्रारंभ हो गई और ज्ञानादि का अनन्त पुरुषार्थ उसमें साथ ही आ गया।

स्व अथवा पर किसी भी द्रव्य को, किसी गुण को या किसी पर्याय को पलटने की बुद्धि जहाँ नहीं रही वहाँ ज्ञान ज्ञान में ही स्थिर हो गया, अकेला वीतरागी ज्ञाता भाव ही रह गया, उसकी अल्पकाल में मुक्ति होगी ही। बस, ज्ञान में ज्ञाता-दृष्टापना रहना ही स्वरूप है, वही सबका सार है। अन्तर की यह बात किसे नहीं जमती, उसे कहीं पर में या पर्याय में फेर-फार करने का मन होता है। ज्ञाताभाव से च्युत होकर कहीं भी फेर-फार करने की बुद्धि वह मिथ्याबुद्धि है।

सर्वज्ञ के अस्तित्व को सिद्ध करके तेरी प्रकट पर्याय में सिद्धत्व नहीं है, उसमें सिद्धों को स्थापित करते हैं; इसलिये तू सिद्धों का लक्ष्य करके हमें सुनना, तू अवश्य सिद्ध होगा। वर्तमान पर्याय अल्पज्ञ होने पर भी तू श्रोतारूप से श्रवण करने आया है। वहाँ तेरी पर्याय की इतनी शक्ति हम देखते हैं - हमारे ज्ञान में ऐसा आया है कि तू अनन्त सिद्धों को स्थापित कर सके। और तू भी वैसा देख सकता है। अहा ! **वंदित्तु सव्वसिद्धे** का यह भाव तो देखो ! अनन्त सिद्धों को तेरी पर्याय में स्थापित करते हैं। तू नहीं रख सकेगा - ऐसा प्रश्न ही नहीं है। अनन्त सिद्धों की स्थापना से तेरा लक्ष्य अब अल्पज्ञरूप नहीं रह सकेगा। अब सर्वज्ञ के ऊपर तेरा लक्ष्य रहेगा; इसलिये सर्वज्ञता पर लक्ष्य रखकर हमें सुनना।

कोई व्यक्ति हाथी या घोड़े का रूप धरे, वेश परिवर्तन करे तो देखने वालों को कौतूहल उत्पन्न होता है; परन्तु जीव ने अपने त्रैकालिक ज्ञायक भगवान के दर्शन हेतु कभी सच्चा कौतूहल ही नहीं किया। कौतूहल अर्थात् कौतुक, जिज्ञासा, आश्चर्य, महिमा। अहा ! राग के पर्दे की ओट में भीतर यह त्रिलोकीनाथ ज्ञायक सम्राट कौन है, क्या वस्तु है ? उसे प्रेमपूर्वक देखने का सच्चा कौतूहल ही जीव ने भी नहीं किया। वर्तमान पर्याय में त्रैकालिक ध्रुव प्रभु की विस्मयता कभी नहीं आई।

जगत की जो वस्तु जिस काल में जैसी परिणमित होना है, वह वैसी ही परिणमित होगी; उसका तो जीव कर्ता है ही नहीं; परन्तु जो निर्मल पर्याय होती है, उसका भी कर्त्ता नहीं है। वह पर्याय भी क्रमबद्ध होती है, उसका कर्त्ता भी ध्रुव तत्त्व नहीं है। स्वयं ज्ञानस्वरूप है - ऐसी दृष्टि होने पर उस काल बाह्य में जगत के जो परिणाम होते हैं। वे क्रमबद्ध होते हैं। ऐसा वह जानता है। और वह जानने की पर्याय भी क्रमबद्ध होती है। उसका भी त्रैकालिक जीव कर्ता नही है। जगत के परिणाम-क्रिया तो क्रमबद्ध है ही; किन्तु स्वरूप की दृष्टि करने पर जगत के परिणाम को क्रमबद्ध जाननेवाली ज्ञान की जो पर्याय होती है, वह भी क्रमानुसार है - ऐसा सम्यग्ज्ञानी जानता है।

समयसार का सार

६८

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सम्यग्दृष्टि सोचते हैं कि आत्मा सत् है, सत् का कभी नाश नहीं होता है और असत् का कभी उत्पाद नहीं होता है – यह महासिद्धान्त है।

जब ज्ञानी जीव यह जानते हैं। तब वे क्यों डरे, इसलिए वे तो निशंक होकर निरन्तर निजज्ञान का ही अनुभव करते हैं।

अन्तिम दो पंक्तियाँ छहों छन्दों में लगभग समान ही हैं; जिनमें यह कहा गया है कि जब ज्ञानीजन उक्त परमसत्य से परिचित हैं तो वे भयभीत क्यों होंगे ? वे सदा ही निशंक रहकर निज आत्मा में अपनेपने का अनुभव करते हैं।

इसप्रकार सुरक्षाभय की बात करके अब अगुप्तिभय की बात करते हैं –

कोई किसी का कुछ करे यह बात संभव है नहीं।
सब हैं सुरक्षित स्वयं में अगुप्ति का भय है नहीं।।
जब जानते यह ज्ञानिजन तब हौंय क्यों भयभीत वे।
वे तो सतत निःशंक हो निजज्ञान का अनुभव करें।।१५८।।

इस अगुप्तिभय का उल्लेख बनारसीदासजी चोरभय नाम से करते हैं; क्योंकि हम अपनी वस्तुओं को चुराये जाने के भय से छुपाकर रखना चाहते हैं, गुप्त रखना चाहते हैं।

इसीलिए हम अपने कपड़ों में गुप्त जेबें बनवाते हैं, अलमारियों में गुप्त लॉकर लगवाते हैं, अपने सूटकेस के नम्बर गुप्त रखते हैं, अपने खाते का नंबर गुप्त रखते हैं। मेरी वस्तु का दुनिया को पता न चल जाय, यदि पता लग जायेगा तो गड़बड़ी हो जायेगी – ऐसा भय हमें सदा बना रहता है। इसी का नाम अगुप्तिभय है। अपना रहस्य प्रगट न हो जाय – ऐसी आशंका या भय ही अगुप्तिभय है।

उक्त कथन बहुत कुछ ठीक होने पर भी बात अकेली चोरी तक ही सीमित नहीं है; क्योंकि अब अकेले चोर थोड़े ही लूटते हैं, अब तो बहुत से लुटेरे हो गये हैं। गुप्तता का कारण भी मात्र चोरी का भय नहीं है, अन्य कारण भी हो सकते हैं।

मेरी लड़की की सगाई की बात चल रही है, यदि किसी को पता चल गया तो वह गड़बड़ कर सकता है। इसका भी तो भय होता है न ? इस कारण सभी लोग बात को गुप्त रखना चाहते हैं।

इसलिए अगुप्तिभय का नाम अगुप्तिभय ही बढ़िया है।

उक्त संदर्भ में सम्यग्दृष्टि सोचते हैं कि जब कोई किसी का भला-बुरा कर ही नहीं सकता है; तब बात गुप्त रहे या प्रकट हो जाय – इससे क्या अंतर पड़ता है ?

ज्ञान से क्या छिपा है? सारे ज्ञेयों का स्वभाव ज्ञान को अपना ज्ञान देना है और ज्ञान का स्वभाव ज्ञेयों को जानना है। है न मियां-बीबी राजी तो क्या करेगा काजी। लड़की कहत कि मर जाऊँगी लेकिन दूसरे के साथ शादी नहीं करूँ लड़का भी कहता है कि मैं उसके बिना नहीं रह सकता। कोई क्या कर सकता है ?

ज्ञान कहता है कि मैं सब जान लूँगा और ज्ञेय कहत कि मैं जानने में आ जाऊँगा। इसप्रकार जब दोनों तैयार है तू गुप्त कैसे रह सकता है ?

हम डरते हैं कि बात खुल न जाय; किन्तु बात खुलन बात तो वस्तु के स्वरूप में ही पड़ी है। बात भी खुलने के तैयार बैठी है और खोलनेवाला ज्ञान भी उसे जानने के तैयार बैठा है। दोनों तरफ से वस्तु का स्वभाव ऐसा है दुनिया की कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती।

ज्ञानी कहते हैं कि जब कोई किसी का कर ही नहीं स है तो फिर तेरे को गुप्त रखने का भाव क्यों है ?

कई लोग चिट्ठियों में लिखते हैं कि पढ़कर फाड़ देना मेरी बात किसी को कहना नहीं। उन लोगों को भय लग इसलिए वे ऐसा लिखते हैं। मैंने आज तक ऐसा नहीं लि मेरा यह नियम है कि मैं एक पंक्ति लिखता हूँ तो ये जा ही लिखता हूँ कि सारी दुनिया इस बात को गारण्टी जानेगी। मैं यह मानकर ही लिखता हूँ कि वह सबको बतायेगा।

बात करने में भी मैं किसी से यह नहीं कहता हूँ कि बात सिर्फ तुमसे कहता हूँ, किसी से कहना नहीं। मैं तरह जानता हूँ कि जब मेरे से ही यह बात कहे बिना नह जा रहा है तो इससे क्या रहा जायेगा ?

सारे जगत तक यह बात पहुँचेगी – यह जानकर ही करो। जितना नियन्त्रण करना है, अपने में ही कर लो औ नहीं होता है तो मत होने दो; पर यह मत कहना कि कि कहना मत या तू किसी को बताना नहीं या फाड़ के फेंक तुमने जिस चिट्ठी में ऐसा लिखा, उस चिट्ठी की वह फ दस फोटोकॉपी करायेगा; क्योंकि ये चिट्ठी उसके हा गई है, अब कहीं गड़बड़ न हो जाय। साधारण चिट्ठी कोई संभालकर ही नहीं रखता है, संभालकर रखने का भ नहीं आता। अरे भाई ! प्रगट होय तो होय, नहीं होय त होय। दुनिया जाने तो जाने, नहीं जाने तो नहीं जाने।

जब कोई किसी का कुछ कर ही नहीं सकता है त अगुप्तिभय किसलिए ? जैसा कि स्पष्ट कहा है –

जब जानते यह ज्ञानिजन, तब हौंय क्यों भयभीत वे
वे तो सतत निःशंक हो, निजज्ञान का अनुभव करें

अब मरणभय के संबंध में सम्यग्दृष्टि का क्या है ? – यह हम कलश पद्यानुवाद के माध्यम से समझ

तार : त्रिमूर्ति फोन : 2707458, 2705581, (फैक्स) 2704127 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

(श्री कुन्दकुन्द कहान दि. तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संचालित)

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

यहाँ पासपोर्ट साइज का नवीनतम फोटो लगावें।

प्रवेश प्रार्थना-पत्र

(नोट : प्रार्थना-पत्र प्रार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये। सभी पूर्तियाँ सही-सही व पूरी होनी चाहिये।)

कक्षा ..... सत्र .....

नाम छात्र ..... पिता का नाम श्री ..... स्थान .....

आयु ..... जन्म तिथि .....पिता या संरक्षक की आजीविका (व्यापार) ..... मासिक आय .....

परिवार में कितने व्यक्ति हैं ? ..... भाई .....बहिन ..... अन्य .....

कभी आपको कोई बड़ी बीमारी हुई हो या अभी हो तो विवरण दें .....

मातृभाषा..... कोई अन्य भाषा जिसका ज्ञान हो .....

विद्यालय का नाम जहाँ से 10 वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की है .....

बोर्ड का नाम (जिससे 10 वीं की परीक्षा दी हो).....

10 वीं की परीक्षा के लिये हुए विषय 1. ..... 2. ..... 3. .....4. ..... 5..... परिणाम ..... प्रतिशत.....

धार्मिक परीक्षा दी हो तो उसका विवरण दें (प्रमाणपत्र संलग्न करें) .....

मैंने विद्यालय एवं छात्रावास के प्रवेश संबंधी नियमों को पढ़कर समझ लिया है। मैं उनका तथा समय-समय पर संशोधित, परिवर्द्धित, परिवर्तित नियमों व अन्य दी गई सूचनाओं का पूर्ण रीति से पालन करूँगा। यदि इसके विरुद्ध चलूँ या अनुशासनभंग करूँ या संस्था के हित में बाधक समझा जाऊँ या परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहूँ तो मुझे संस्था से पृथक् करने तक का दण्ड दिया जा सकता है, वह मुझे बिना आपत्ति के मान्य होगा। मुझे विद्यालय एवं छात्रावास में प्रवेश दिया जाये।

पत्र-व्यवहार का पूरा पता : ..... हस्ताक्षर छात्र

..... दिनांक .....

पिनकोड ..... फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) .....

पिता या संरक्षक द्वारा भरा जाय

यह छात्र रिश्ते में मेरा ..... है। मुझे विद्यालय एवं छात्रावास के सम्पूर्ण नियम स्वीकार हैं।

मैं स्वेच्छा से इस छात्र को प्रवेश दिलाना चाहता हूँ तथा प्रमाणित करता हूँ कि छात्र का उपर्युक्त लिखना सही है। यह संस्था के वर्तमान नियमों, समय-समय पर बननेवाले अन्य नियमों, सूचनाओं और अनुशासन का बराबर पालन करेगा तथा विरुद्ध चलने पर अधिकारियों द्वारा दिया हुआ दण्ड मान्य करेगा। छात्र की सभी गतिविधियों के लिए मैं जिम्मेदार रहूँगा।

नाम व पूरा पता : ..... हस्ताक्षर (पिता या संरक्षक)

..... दिनांक .....

छात्र के निवास स्थान के दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों का प्रमाणीकरण

हम प्रमाणित करते हैं कि छात्र और उसके पिता या संरक्षक ने जो ऊपर लिखा है वह सही है। छात्र विद्यालय और छात्रावास में प्रविष्ट होने योग्य है।

नाम ..... नाम .....

पता ..... पता .....

....

हस्ताक्षर हस्ताक्षर

दिनांक ..... दिनांक .....

नोट : प्रवेशसंबंधी आवश्यक नियम कृपया पीछे देखें।

प्रवेशसम्बन्धी आवश्यक नियम

1. विद्यालय एवं छात्रावास में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राजस्थान) के जैनदर्शन सहित उपाध्याय पाठ्यक्रम (हायर सैकण्डरी समकक्ष) एवं राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के जैनदर्शन शास्त्री पाठ्यक्रम (तीन वर्षीय स्नातक बी.ए. समकक्ष) में अध्ययन हेतु दिगम्बर जैनधर्म में श्रद्धा रखनेवाले छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

2. महाविद्यालय का सत्र जुलाई से आरम्भ होता है। प्रत्येक वर्ष के लिए नया प्रवेश लेना आवश्यक है।

3. उपाध्याय कक्षा में प्रवेश हेतु सैकेण्डरी (10वीं बोर्ड) या उसके समकक्ष या उच्च परीक्षा पास होना अनिवार्य है। सैकेण्डरी परीक्षा सम्पूर्ण विषय (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान) सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है। **कृपांक (ग्रेस)** से उत्तीर्ण होनेवाले छात्रों का प्रवेश नहीं हो सकेगा।

4. प्रवेश हेतु साक्षात्कार के लिए छात्र को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में पूरे दिन उपस्थित रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। यह शिविर प्रतिवर्ष मई माह में आयोजित होता है।

5. प्रवेश की स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना छात्र को जून के द्वितीय सप्ताह से पूर्व भेज दी जावेगी। संस्था अस्वीकृति का कारण बताने को बाध्य नहीं है।

6. छात्र को विद्यालय द्वारा निर्दिष्ट दिनचर्या का पालन करना व उपर्युक्त पाठ्यक्रम के साथ विद्यालय द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम पढ़ना अनिवार्य है।

7. प्रत्येक छात्र को प्रतिदिन देवदर्शन करने, छना हुआ पानी पीने, रात्रि भोजन त्याग करने, धूम्रपान नहीं करने, पान, तंबाकू-गुटखा तथा लहसुन, प्याज, आलू आदि अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाने का नियम रखना होगा। छात्रावास में खाना बनाना, ताश, जुआ खेलना निषिद्ध है।

8. छात्र अपने अतिथि को पूर्व स्वीकृति प्राप्त करके ही निर्दिष्ट स्थान पर ठहरा सकेंगे।

9. छात्र को सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर ही रहना आवश्यक होगा। अपनी इच्छा से स्थान परिवर्तन नहीं किया जा सकेगा, छात्र अपने कमरे में धार्मिक वातावरण रखेंगे, अपने कमरे व उसके आस-पास के स्थान को स्वच्छ रखेंगे व बाथरूम आदि में गंदगी नहीं करेंगे।

10. प्रत्येक कमरे में छात्र द्वारा ट्यूब लाईट एवं पंखें के अलावा बिजली का हीटर, सिगड़ी, रेडियो, टेप आदि का प्रयोग करना दण्डनीय अपराध होगा।

11. कोई भी छात्र नकदी या अन्य जोखिम अपने पास नहीं रखेगा, अन्यथा खो जाने पर उसकी स्वयं की ही जिम्मेदारी होगी। नकदी आदि कार्यालय आदि में जमा कराके रसीद प्राप्त कर लेनी चाहिए।

12. किसी भी कारण से छात्रावास से बाहर जाने हेतु संबंधित अधिकारी से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

13. सत्र के बीच में अवकाश पर जाने के लिए प्रार्थना-पत्र देकर तीन दिन पूर्व लिखित स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है। ग्रीष्मावकाश में कोई भी छात्र बिना अनुमति छात्रावास में नहीं रह सकेगा।

14. धार्मिक अध्ययन से प्रत्यक्ष में उपेक्षा दिखानेवाले, बिना पर्याप्त कारण के परीक्षा में अनुपस्थित रहनेवाले या अनुत्तीर्ण रहनेवाले, अनुशासन भंग करने वाले छात्रों को बिना किसी पूर्व सूचना के तत्काल छात्रावास से निष्कासित किया जा सकेगा। वार्षिक परीक्षा में पास न होनेवालों को सामान्यत: अगले वर्ष छात्रावास में प्रवेश नहीं मिलेगा। इस बारे में विद्यालय एवं छात्रावास अधिकारी का निर्णय ही अंतिम होगा एवं वह अपने निर्णय का कारण बताने के लिये बाध्य नहीं होगा।

15. उपर्युक्त नियमों के अतिरिक्त समय-समय पर संशोधित, परिवर्द्धित एवं परिवर्तित नियमों का एवं अन्य आदेशों का छात्र को पूणरुपेण पालन करना होगा; इसका उल्लंघन करने पर जो दण्ड अधिकारी देंगे, वह छात्र को सर्वथा मान्य होगा।

उपर्युक्त नियम हमें पूर्ण मान्य हैं।

_____ _____

हस्ताक्षर छात्र हस्ताक्षर अभिभावक

प्रवेश प्रक्रिया

1. सर्वप्रथम इस प्रवेश प्रार्थना-पत्र को छात्र स्वयं सुवाच्य लिपि में भरकर माध्यमिक शिक्षाबोर्ड की सैकण्डरी परीक्षा (10 वीं) की अंकसूची की सत्यापित प्रतिलिपि सहित जयपुर कार्यालय में भेजें। यदि 10वीं का परीक्षा परिणाम घोषित नहीं हुआ हो तो 9 वीं कक्षा की अंकसूची की प्रतिलिपि ही संलग्न करें।

2. छात्रों को संस्था द्वारा आयोजित वीतराग-विज्ञान शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण एवं साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए शिविर के दौरान पूरे दिन शिविर में रहना आवश्यक है। इस वर्ष यह शिविर 11 मई से 28 मई 2003 तक जयपुर में आयोजित होगा।

3. प्रशिक्षण शिविर के दौरान ही छात्र के परीक्षाफल का प्रतिशत, प्रतिभा, चाल-चलन, धार्मिक रुचि व साक्षात्कार के आधार पर विद्यालय में प्रवेश हेतु छात्र का चयन किया जायेगा।

4. प्रवेश प्राप्ति की सूचना मिलने पर निर्दिष्ट तिथि को जयपुर आना अनिवार्य है।

नोट :- यह प्रवेश फार्म भरकर निम्न पते पर भेजें - **श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय,**

ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458, फैक्स : 2704127

मृत्यु कहे सारा जगत बस प्राण के उच्छेद को।
ज्ञान ही है प्राण मम उसका नहीं उच्छेद हो।।
तब मरणभय हो किसतरह हों ज्ञानिजन भयभीत क्यों।
वे तो सतत निःशंक हो निजज्ञान का अनुभव करें।।१५६।।

सभी को मरण का भय रहता है। कोई मार न दे – इसके लिए हम हजारों गोलियाँ बनाते हैं और किसी के बिना मारे भी हम मर न जावें – इसके लिए भी हजारों गोलियाँ बनाते हैं। इस अंतर इतना है कि ये दवाई की गोलियाँ हैं और वे सब बंदूक की गोलियाँ हैं।

सारा जगत तो प्राणों के उच्छेद को ही मृत्यु मानता है और प्राण दस होते हैं – पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और काय, आयु तथा श्वासोच्छवास। इन दस प्राणों के उच्छेद को सारा जगत मरण मानता है।

यद्यपि व्यवहार से प्राणी दस प्राणों से जीता है; किन्तु निश्चय से तो चेतना ही उसका प्राण है। उस चेतना का तो कभी उच्छेद होता ही नहीं है, तो मरणभय आया कहाँ से ?

इसलिए जब आत्मा का मरण हो ही नहीं सकता है, तब ये ज्ञानीजन मरणभय से भयभीत क्यों हों; वे तो सतत् निःशंक होकर निजज्ञान का अनुभव करते रहते हैं।

अब अंतिम अचानक भय के संबंध में सम्यग्दृष्टि क्या विचार करते हैं – यह इस कलश पद्यानुवाद के माध्यम से समझते हैं–

इसमें अचानक कुछ नहीं यह ज्ञान निश्चल एक है।
यह है सदा ही एकसा एवं अनादि अनंत है।।
जब जानते यह ज्ञानिजन तब होंय क्यों भयभीत वे।
वे तो सतत निःशंक हो निजज्ञान का अनुभव करें।।१६०।।

यह अंतिम भय बड़ा विचित्र है। मौत का, संपत्ति का, सभी का बढ़िया इंतजाम कर रखा है। वैद्य लोग कहते हैं कि बढ़िया से बढ़िया इलाज हमारे पास है। ज्योतिषी कहता है कि आपकी आयु की रेखा बहुत लंबी है, आपके ग्रह-नक्षत्र भी अनुकूल हैं। हमारे प्रधानमंत्रीजी कहते हैं कि आप चिंता मत करो हमने बुलेटप्रूफ बंकर बना लिया है। सारा इंतजाम पक्का है; फिर भी कुछ अचानक न हो जाय। इसप्रकार की आशंका से भयभीत होना ही अचानक भय है।

डॉक्टर ने कल जाँच करके बता दिया कि अभी तो एक भी बीमारी नहीं है, फिर भी अचानक कुछ हो गया तो ?

अभी तो बादल साफ है, लेकिन अचानक पानी न बरस जाय। जब महीने भर पहले बादल उठते हैं, तब से वैज्ञानिक देखते हैं और यह भी देखते हैं कि किस दिशा में जा रहे हैं जब उन्होंने देख लिया कि यहाँ से हजार-हजार मील तक बादल ही नहीं है, यदि हो भी तथा इसी दिशा में दौड़े भी, तब भी दस दिन पहले आ ही नहीं सकते। फिर किसलिए तू घबड़ा रहा है कि अचानक वर्षा नहीं हो जाय।

ऐसे ही एक फोगिया नाम की बीमारी होती है; वह भी अचानक भय है। कुछ भी नहीं है, फिर भी ऐसा लगता है कि मेरे खाना में जहर तो नहीं मिला दिया है।

अरे भाई ! इस जगत में अचानक तो कुछ भी नहीं होता; सब कुछ सुनिश्चित है।

ज्ञान तो निश्चल स्वभाववाला है। उसमें अचानक कुछ होता ही नहीं है। यह सदा एक सा ही रहता है। अनादि-अनंत है, परिणमनशील है। अचानक परिणमनशील ध्रुव बन जाय या त्रिकाली ध्रुव परिणमित हो जाय – ऐसा कभी नहीं होता और यह भी नहीं होता कि भव्य अभव्य हो जाय या अभव्य भव्य हो जाय। जब ज्ञानीजन यह जानते हैं, तब वे भयभीत क्यों होंगे ? वे तो सतत् निःशंक होकर निजज्ञान का अनुभव करते हैं और निरन्तर निजज्ञान का अनुभव करनेवालों को कभी कोई भय नहीं होता।

इसप्रकार सप्तभयों की चर्चा के उपरान्त अब निशंकित अंगधारी सम्यग्दृष्टि को कर्मबंध नहीं होता, निरन्तर निर्जरा होती है – यह बताते हैं –

नित निःशंक सद्दृष्टि को कर्मबंध न होय।
पूर्वोदय को भोगते सतत निर्जरा होय।।१६१।।

सम्पूर्ण निर्जरा अधिकार का भाव इन दो पंक्तियों में आ गया है। भोग के काल में भी सम्यग्दृष्टि को निर्जरा होती है। यहाँ यह बात सिद्ध करनी है। ऊपर कहे पद्य में भी यही कहा कि शंका से रहित, भय से रहित सम्यग्दृष्टि जीवों को ४१ प्रकृतियों का बंध नहीं होता है। वे सम्यग्दृष्टि पूर्वोदय को ही भोगते हैं; क्योंकि वे नया बंध तो करते ही नहीं है और उनको निर्जरा निरन्तर विद्यमान है। उनके कर्म ही नहीं, अपितु भोगने का भाव भी खिर जाता है।

निर्जरा अधिकार की पहली गाथा में द्रव्य निर्जरा का स्वरूप कहा था कि कर्म खिर जाते हैं, फिर दूसरी गाथा में कहा कि सुख-दुःख भोगने के बाद कायम नहीं रहते हैं, वे भी खिर जाते हैं। भोग भी खिर जाते हैं और भोगने का भाव भी खिर जाता है; इसप्रकार सम्यग्दृष्टि के द्रव्यनिर्जरा और भावनिर्जरा दोनों विद्यमान हैं, बंध नहीं है।

इसी बात को इस कलश पद्यानुवाद में भलीभाँति स्पष्ट किया है –

बंध न हो नव कर्म का पूर्व कर्म का नाश।
नृत्य करे अष्टांग में सम्यग्ज्ञान प्रकाश।।१६२।।

नये कर्मों का तो बंध नहीं होता है तथा पूर्व कर्म नाश को प्राप्त हो जाते हैं; अतः अब सम्यग्ज्ञान का प्रकाश ही शेष रहा। सम्यग्ज्ञान का प्रकाश सर्वांग में प्रकाशित हो जाता है, ज्ञान ज्ञान, ज्ञान के अलावा कुछ शेष नहीं रहता है।

इसप्रकार विस्तार से निःशंकित अंग की चर्चा हुई; अब हम संक्षेप में बाकी के सात अंगों को समझेंगे।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

तमिलनाडू में धर्म प्रभावना

आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै तमिलनाडू में स्थित 'आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर' की ओर से दिनांक 24 जनवरी से 22 फरवरी 2003 तक तमिलनाडू के गाँवों में शिविरों का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत एरुम्बूर, आयलवाडी तथा कल्लपुलियूर आदि गाँवों में दस-दस दिन का शिविर लगाया गया; जिसमें बालकों को तमिल भाषा में बालबोध पाठमाला पढ़ायी गई।

प्रत्येक गाँव में लगभग 35-40 लोगों ने शिविर का लाभ लिया।

शिविर के अन्तिम दिन लिखित परीक्षा लेकर पुरस्कार वितरण किया गया। शिविर का उद्घाटन संस्था के ट्रस्टी द्वारा किया गया तथा सम्पूर्ण शिविर का संचालन पण्डित बालाजी शास्त्री द्वारा किया गया।

प्रतिमा एवं चरण स्थापना

गुना (म.प्र.) : श्री दिगम्बर जैन वीतराग-विज्ञान भवन के अन्तर्गत श्री रत्नत्रय जिनालय में दिनांक 19 से 21 फरवरी 2003 तक 1008 भगवान कुन्थुनाथजी की प्रतिमा प्रतिष्ठापना के अतिरिक्त चारों अनुयोगों के मूर्धन्य आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य धरसेन, आचार्य समन्तभद्र तथा आचार्य रविषेण की चरणस्थापना का समारोह आयोजित किया गया।

इसी अवसर पर याग मण्डल-विधान एवं पंच परमेष्ठी-विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित श्री संजयकुमारजी जेवर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वानों पण्डित मांगीलालजी नीमखेड़ी, पण्डित बाबूलालजी पल्लीवाल, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित सुरेशचन्दजी शास्त्री का लाभ भी समाज को मिला। **- बाबूलाल बांझल**

वैराग्य समाचार

सहारनपुर निवासी श्री हेमचन्दजी जैन सर्राफ का 72 वर्ष की आयु में दिनांक 13 फरवरी 2003 को शान्त परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप अच्छे स्वाध्याय प्रेमी, कुशलवक्ता एवं समाज में अग्रणीय थे। आपकी स्मृति में परिवार द्वारा जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 500/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो- यही कामना है।

शुभकामनायें

विगत माह उज्जैन निवासी अरुणकुमारजी कासलीवाल के सुपुत्र चि. मनीष जैन का विवाह सम्पन्न हुआ, आपको जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से बधाई !

आपके विवाहोपलक्ष में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 2 हजार रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

फैडरेशन की टेबल से -

बीते वर्ष फैडरेशन की शाखाओं द्वारा किये गये विशिष्ट कार्यों का ब्योरा इस कालम के अन्तर्गत प्रकाशित किया जा रहा है। सभी शाखाओं से एतदर्थ वार्षिक रिपोर्ट आमंत्रित है।

वर्ष 2002 में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की करेली शाखा ने अपनी तत्त्वप्रचार की गतिविधियों को आगे बढ़ाते हुये निम्न उपलब्धियाँ अर्जित की -

(1) नर्मदांचल ग्रुप शिविर - करेली शाखा ने नरसिंहपुर जिले के समीपवर्ती 30 स्थानों पर महाविद्यालय के 45 विद्वानों के सहयोग से प्रवेश शास्त्री एवं अभिषेक शास्त्री के संयोजन में 1 जून से 8 जून तक विशाल धार्मिक शिविर का लगातार दूसरी बार आयोजन किया गया।

(2) बाल संस्कार शिविर - दिनांक 9 जून से 15 जून तक के.के. पी.पी. एस. उज्जैन के सहयोग से करेली फैडरेशन ने स्थानीय गर्ल्स स्कूल में आध्यात्मिक एवं बाल संस्कार शिविर का भव्य आयोजन किया। जिसमें सम्पूर्ण समाज को अनेक विद्वानों का लाभ मिला।

(3) नवीन शाखा का गठन - करेली शाखा के अथक प्रयासों से समीपवर्ती नगर बनखेड़ी में युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन की प्रथक-प्रथक शाखाओं का गठन किया गया।

(4) दशलक्षण पर्व पर विद्वान व्यवस्था - श्री टोडरमल स्मारक के निर्देशानुसार करेली मुमुक्षु के विविध विद्वानों ने करेली मण्डल, करेली बगीचा, बनखेड़ी, पिपरिया तथा मुम्बई में तत्त्वप्रचार किया।

(5) पण्डित प्रवेश शास्त्री द्वारा प्रतिदिन वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन एवं प्रत्येक रविवार को सामूहिक पूजन का आयोजन।

(6) पंचकल्याण की 5वीं वर्षगांठ पर सीमंधर जिनालय में श्रुतस्कंध विधान तथा धरसेनाचार्य एवं कुन्दकुन्दाचार्य की चरण स्थापना, जिनवाणी स्थापना, शिखर पर ध्वज स्थापना तथा 58 कलशों का आरोहण किया।

करेली शाखा को उक्त सम्पूर्ण उपलब्धियाँ **श्री मुकेश कपूरचन्दजी जैन** के अथक प्रयास से ही संभव हो सकी हैं।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **मार्च (द्वितीय) 2003**
J.P.C. 3779/**02/2003-05**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127